ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 296-297

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

पुराणों का वर्तमान स्वरूप एवं ऐतिहासिक मूल्य

विवेकानन्द चौबे

असिस्टेन्ट प्रोफेसर: प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, राष्ट्रीय पी.जी. कालेज, जमुहा, जौनपुर (उ0प्र0) भारत।

Received- 18.08.2020, Revised- 23.08.2020, Accepted - 26.08.2020 E-mail: - bcb7379@gmail.com

सारांश : ***भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास के सम्यक ज्ञान के लिए पुराणों का गहन अनुशीलन परमावश्यक है। प्राचीन भारतीय जीवन के विविध पक्षों की पूर्ण जानकारी पुराणों की सहायता के बिना सम्भव नहीं है।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, सम्यक ज्ञान, गहन अनुशीलन, भारतीय जीवन, परवर्ती।

आज जिस रूप में पुराण उपलब्ध होते हैं, रचना की दृष्टि से और भाषा के आधार पर वे इतने प्राचीन नहीं माने जा सकते। साथ ही विषय के दृष्टिकोण से पुराणों के अधिकांश रूप परवर्ती और अर्वाचीन अवश्य है परन्तु पाश्चात्य विद्वानों ने जितना पश्चात्कालीन उनको माना है उतने आधुनिक वे नहीं हैं। संभावना बुद्धि से विचार करने पर अवगत होता है कि जिस रूप से वैदिक साहित्य में पुराण की चर्चा है उसका समावेश आधुनिक अष्टादश पुराणो में कालक्रम से हो गया तथा कालक्रम से ही पुराणों ने वैदिक साहित्य के साथ ही अन्य नवोदित शास्त्रों को भी अपने विशाल कोषागार में समाविष्ट करना आरम्भ किया। परवर्ती कालों में पुराणों ने अपना पौराणिक रूप धारण किया। अमरकोष के मत से पुराणों की अपर संज्ञा है– पंचलक्षण और तदनुसार पुराणों में (1) सृष्टि (2) लय और पुनः सृष्टि (3) देव तथा ऋषियों की वंशावली (4) मनु के काल विभाग और (5) (वंशानुचरित) प्राचीन राजवंशों का इतिहास इन पाँच विषयों का समावेश हुआ1। इनमें ऐतिहासिक दृष्टि से वंशानुचरित का विषेश महत्व है।

प्रत्येक पुराण में अष्टादश पुराणों की नामावली का संकेत मिलता है। नामावली का क्रम समस्त पुराणों में प्रायः एक सा ही है। इसमें दो–एक साधारण परिवर्तनों के अतिरिक्त प्रायः एकरूपता ही है। विष्णु पुराण का क्रम निम्न प्रकार है। यथा (1) ब्रह्म (2) पादम (3) वैष्णव (4) शैव (5) भागवत (6) नारदीय (7) मार्कण्डेय (8) आग्नेय (9) भविष्यत् (10) ब्रह्मवैवर्त (11) लैंग (12) वाराह (13) स्कान्द (14) वामन (15) कौर्म (16) मात्स्य (17) गरूड़ और (18) ब्रह्माण्ड।2 अष्टादश महापुराणों में छः सात्विक, छः राजस और छः तामस हैं। वैष्णव, नारदीय, भागवत, गारूड़, पादम और वाराह ये छः महापुराण सात्विक हैं।3

सात्विक पुराणों में विशेषतः भगवान हरि के ही माहात्म्य का परिवर्णन है।4 अष्टादश पुराणों में दस में शिवस्तुति है, चार में ब्रह्मा की और दो–दो में देवी तथा हरि की5। हरिपरक पुराणों में (1) वैष्णव और (2) भागवत– ये ही दो सम्भावित हैं, क्योंकि इन दो पुराणों में एक मात्र वैष्णव धर्म का ही प्रतिपादन है। अतएव ये दोनों सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के पुराण हैं। विष्णु पुराण में तो सर्वत्र प्रायः वैष्णव माहात्म्य का ही वर्णन है6। विष्णु पशुण में भी विष्णुपरक पादम के पश्चात् और भागवत के पूर्व विष्णु पुराण का ही नामोल्लेख हुआ है। इस कारण से भी वैष्णव महापुराण का स्थान उच्चतम श्रेणी में आता है। पराशर मुनि का कथन है कि इस महापुराण में पाँचों पौराणिक लक्षण अवतरित हुए हैं।8

पुराणों की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में आधुनिक विद्वानों की धारणा समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। वर्तमान युग के प्रसिद्ध अन्वेषक डॉ० पुसालकर का मत है कि भारतीय इतिहास के संशोधन के आरम्भिक काल में 18वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों और 19वीं शताब्दी के आरम्भ में पुराणों का कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं माना जाता था। तत्पश्चात् कैपटेन स्पेक ने नूबिया (कुशद्वीप) जाकर नील नदी के उद्गम स्थान का पता लगाया और उससे पुराणों के वर्णन का समर्थन हुआ। तब शनैः शनैः पुराणों पर विद्वानों की आस्था दृढ़ होने लगी। किन्तु ताम्रपत्रों और मुद्राओं से ऐतिहासिक तथ्य को खोज निकालने की प्रवृति भी इसी समय जागृत हुई। इस कारण पौराणिक मूल्य में ह्रास होने लगा और कहीं–कहीं पुराणगत परम्परा का इतिहासवृत अयथार्थ भी प्रमाणित हुआ। कुछ अंशों में बौद्ध–ग्रन्थों ने भी पौराणिक प्रतिपादनों का खण्डन किया। इस प्रकार सन्देहवृद्धि से पुराणों पर अविश्वास उत्पन्न होने लगा। बाद में पाश्चात्य देशीय विद्वान विल्सन ने पुराणों का पद्धतियुक्त अध्ययन किया और विष्णु पुराण का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। इसकी एक बहुत बड़ी सारगर्भित भूमिका उन्होंने लिखी तथा उसमें तुलनात्मक टिप्पणियाँ भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जोड़ी। इससे संस्त साहित्य के इस महान् अंग की ओर पाश्चात्य विद्वानों का अध्ययन विशेष रूप से आकर्षित हुआ। अब तक पुराणों की जो अनुचित उपेक्षा हो रही थी, उसका अन्त हुआ और स्वतः प्रमाण के रूप में पुराण विष्वास–स्थापन के योग्य समझे जाने लगे। आधुनिक युग के शिक्षित समाज में जो आज पौराणिक उपयोगिता की ओर प्रवृति दृष्टिगोचार हो रही है उसका सम्पूर्ण एवं सर्वप्रथम श्रेय श्री विल्सन को ही है और इस दिशा में वे प्रधान नेतृत्व के आसन पर आसीन होने के योग्य हें। पुराणों का विशेष अध्ययन पिछली शताब्दी के आरम्भ मे पार्जिटर ने किया। उनके धैर्य और अध्यवसाययुक्त अनुसंधान का यह फल हुआ कि पुराणों की ऐतिहासिक सामग्रियों का एक पर्यालोचनात्मक विवरण जगत के समक्ष आया। पुराणों में जो ऐतिहासिक वर्णन हैं, उनका पक्ष इससे बहुत पुष्ट हुआ। स्मिथ ने यह प्रमाणित किया कि मत्स्य पुराण में आन्ध्रों का जो वर्णन है, वह प्रायः यथार्थ है। इतिहास के विद्वान अब यह समझने लगे हैं कि मौर्यो के विषय में विष्णुपुराण का और गुप्तों के विषय में वायु पुराण का वर्णन विष्वसनीय है।9

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च।
सर्वोष्वेतेषु कथ्यन्ते वंशानुचरितं च यत्।।
.....3/6/25

2. ब्राझं पादमं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा।
तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्।।
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यन्नवमं स्मृतम।
दशमं ब्रह्मवैवर्त लैंगमेकादशं स्मृतम्।।
बाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चात्र त्रयोदशम्।
चातुर्दशं वामनं च कौमं पंचदशं तथा।।
मात्स्यं च गारूडं चैव ब्रह्माण्डं च ततः परम्।
महापुराणान्येतानि हयष्टादश महामुने।।
.....6/21–24

3. वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम्।
गरूडं च तथा पाद्म बाराहं शुभदर्शने।।
सात्विकानि पुराणानि विशेयानि शुभानि वै।
... पद्मपुराणम् उत्तराखण्ड, 263/82–83

4. सात्विकेषु पुराणेषु महात्म्यमधिकं हरेः।
.....मत्स्यपुराणम् 53/68

5. अष्टादशपुराणेषु दशभिर्गीयते शिवः ।
चतुर्भिर्भगवान् ब्रह्मा द्वाभ्यां देवी तथा हरिः।।
.....स्कन्दपुराणम् केदारखण्ड,1

6. कथ्यते भगवन्विष्णुरशेषैष्वेव सत्तम।
.....3/6/27

7. द्रष्टव्य–3/3/21

8. सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशमन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं .त्स्नं मयात्र तव कीर्तितम् ।।
...6/8/13

9. संस्कृति, पृ0 5571

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*